

आध्यात्मिक पूर्णता

लेखक:

सैय्यद मुर्तजा मुजतहेदी सीसतानी

अनुवादक:

ज़ैन अलवी जौनपूरी

WWW.ALMONJI.COM

Email: info@almonji.com

किताब का नाम: आध्यात्मिक पूर्णता
लेखक: सैय्यद मुर्तजा मुजतहेदी सीसतानी
अनुवादक: जैन अलवी जौनपूरी
नज़रे सानी: फ़िज़्ज़ा सिद्दीका अज़हरी
कम्पोज़िंग: जाहेदा अज़हरी

आध्यात्मिक पूर्णता

दुनिया में फंस कर इंसान आध्यात्मिकता बातों से दूर हो चुका है। इंसान सांसारिक माया-मोह में फंस चुका है जिसे आध्यात्मिक बातों पर विचार करने का समय ही नहीं है। कुछ लोग संसार के कामों में फंस जाते हैं और उनको खुदा तक की खबर नहीं होती है। और ऐसे लोगों को अलेबैत अलैहेमुस्सलाम की तरफ से मिलने वाली गुप्त सहायता की जानकारी ही नहीं होती है।

जिसने अपनी आँखों पर दुनियावी पट्टी बांधी हुई है वह इस दुनिया से भी ज़्यादा सुंदर दुनिया को किस तरह देख सकता है?

इस लिएकि अगर कोई अपनी आँखों पर रंगीन ऐनक लगा ले तो फिर जिस तरह का ऐनक का रंग है उसको वैसा ही दिखाइ देगा और वह असली रंग को नहीं देख सकता है।

जिसके आगे-पीछे दुनियावी दीवार खड़ी हो वह किस तरह दीवार के उस पार देख सकता है ?

अगर कोई भी एक कमरे में बन्द हो और उसमें घुप अंधेरा हो तो क्या वह उस कमरे के बाहर की चीज़ों को, दुखों और खुशियों को देख सकता है ?

गैबत के ज़माने में जन्म लेने वाला इंसान जेल में कैद एक ऐसे इंसान की तरह है जिसको वहाँ से रेहाई का कोई रास्ता भी प्राप्त ना हो । बल्कि ऐसे लोगों का हाल उन क्रेदियों से भी बुरा है कि जो गैबत के ज़माने में जीवन बिता रहे हैं। क्योंकि कैदी को कम से कम यह तो पता है कि वह कैद में हैं और रेहाई की आशा में अपना जीवन बिताते हैं और हमेशा रेहाई के बारे में ही सोच-विचार करते हैं। लेकिन अफ़सोस कि गैबत के ज़माने में जन्म लेने वाले इस ज़माने के अलावा दूसरे ज़माने के बारे में जानकारी नहीं रखते हैं। उन की मिसाल कुँए के मेंढक जैसी है, जो कुँए को ही पूरा संसार सझता है। उन्होंने ज़हूर के ज़माने का स्वाद ही नहीं चखा और ना ही ज़हूर के ज़माने को मिठास को चखा है। इस कारण वह ज़हूर के ज़माने की कैद में हैं वह ना तो पहले इस जेल से रेहाई की फ़िक्र में थे और ना अब हैं।

हम और गैबत के ज़माने के सारे कैदी, ज़हूर के प्रकाशमय ज़माने से लापरवाह हैं और इस तरह हम अपनी कैद में और ज़्यादा बढ़ोतरी कर रहे हैं। हम गैबत की जेल में कैद हैं और फिर भी हम उससे रेहाई की फ़िक्र नहीं करते ।

ग़ैबत के ज़माने की कैद आध्यात्मिक चीज़ों से लापरवाही का नतीजा है।

इंसान का आध्यात्मिक और भौतिकी पक्ष

इंसान जिस्म और आत्मा से मिलकर बना है इसलिए उसको सिर्फ़ और सिर्फ़ भौतिक चीज़ों पर ही ध्यान नहीं देना चाहिए बल्कि उसको चाहिए की वह आध्यात्मिक पक्ष पर भी ध्यान दे वरना अगर एक ही पक्ष को ध्यान में रखा और दूसरे को छोड़ दिया तो यह ऐसा है जैसे कि उसने अपने जीवन के महत्वपूर्ण पक्ष को छोड़ दिया।

ग़ैबत के ज़माने में इंसान अक्सर आध्यात्मिक पक्ष से उस तरह लाभ नहीं उठाते जैसे कि इंसानों को उठाना चाहिए लेकिन ज़हूर के ज़माने में कि जो इंसानों के पूर्ण होने का दिन है, सारा इंसानी समाज आध्यात्मिक और भौतिकी पक्ष दोनों में सफल हो जाएँगे। उस दिन इंसानों के सोच-विचार हर गंदगी से पवित्र हो जाएँगे और सब के सब अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम के आज्ञाकारी होंगे। और इंसान ज्ञान और नूर से प्रकाशमय होगा। इसीलिए उस दिन इंसान हर बुराई और गंदगी से पवित्र हो जाएगा और इंसान शैतान की चाल बाज़ियों में फंस कर कोई गलती नहीं करेगा।

अतः उस ज़माने को पाने और देखने वाले भाग्यशाली होंगे। और जिस तरह ज़हूर के ज़माने में वह लोग इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के आज्ञाकारी होंगे उसी तरह वह ग़ैबत के ज़माने में भी इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के आज्ञाकारी होंगे।

अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम ने इस बात को विस्तार से बयान किया है इस सत्य को बयान करने वाली रेवायात में ज़हूर के ज़माने की नूरानियात के नोकात (पोवाइंट्स) को बयान किया है। और इन रेवायात में ग़ैबत के ज़माने में इंसानों का कर्तव्य क्या है इस बात को बयान किया गया है। इसी तरह उन रेवायात में अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम के चाहने वालों की प्रसन्नता को बयान किया गया है।

हज़रत इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलेहिस्सलाम बयान करते हैं कि, रसूले खुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम फ़रमाते हैं:

طوبى لمن أدرك قائم أهل بيتي وهو مقتدره قبل قيامه يتولى وليه ويتبرأ من عدوه، ويتولى الأئمة الهادية من قبله، أولئك رفقاء وذوو وذى ومودتى، وأكرم أمتى على

सौभाग्य वाला है वह व्यक्ति जो हमारे अहलेबैत के क़ायम को (क़ायम: इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुशरीफ़ को कहते हैं।) देखेगा और उनका आज्ञाकारी हो। उससे प्रेम करने वालों से प्रेम करता हो, और उनके दुश्मनों से दुश्मनी करता हो। इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुशरीफ़ से पहले दूसरे इमामों की विलायत को स्वीकार करता हो। वह मेरे दोस्तों और मेरी मोहब्बत के साथ रहेगा वह मेरे लिए मेरी उम्मत के महान लोगों में होगा। (१)

इसलिए इंसान के सोच-विचार को पहचानने का मेयार इस हद तक हो कि इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुशरीफ़ से मोहब्बत का दावा करने वालों में से

उनके सच्चे प्रेमियों को पहचान सकें और उनके रास्ते पर ना चलने वालों को भी पहचान सकें।

जो रेवायत बयान की गई है अगरचे वह ज़हूर के प्राकाशमयी ज़माने से सम्बंधित है लेकिन ग़ैबत के समय में हमारा क्या कर्तव्य है इस बात को भी बयान किया गया है। लेकिन अफ़सोस की बात यह है कि ना तो हम ग़ैबत के ज़माने में अपनी ज़िम्मेदारियों को समझते हैं और ना सही तरह से उनपर ध्यान देते हैं।

हमारी ज़िम्मेदारियाँ

ज़हूर के ज़माने में वही सर उठा कर जीवन बिताएगा कि जिसने ग़ैबत के ज़माने में अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा किया होगा।

हम यहाँ पर कुछ ज़िम्मेदारियों को बयान करेंगे:

१. ग़ैबत के ज़माने में हमारी ज़िम्मेदारी यह है कि हमें इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के अहकामात को जानकर उसको पूरा करना चाहिए। इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ से प्रेम व दोस्ती, उनके ज़हूर की प्रतीक्षा व प्रार्थना और उनके ज़हूर के ज़माने को पाना यह सब उसी सूरत में सम्भव है कि जब इंसान ग़ैबत के ज़माने में इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ का आज्ञाकारी हो।

२. ग़ैबत के ज़माने में हमारी ज़िम्मेदारी यह है कि हम इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ से मोहब्बत करने वालों से प्रेम करें।

३. इमाम-ए-जमाना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के दोस्तों से प्रेम, उनके दोस्तों को पहचानने पर निर्भर है, क्योंकि जब तक हम किसी को पहचानेंगे नहीं तो किस तरह उनसे प्रेम कर सकते हैं।

४. हमें इमाम-ए-जमाना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के दुश्मनों से नफरत करना चाहिए और उनसे दूर रहना चाहिए।

५. इमाम-ए-जमाना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के दुश्मनों से दुश्मनी करना भी उनको पहचानने पर ही निर्भर है।

इनके अलावा और भी ज़िम्मेदारियाँ हैं। इमाम-ए-जमाना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के ज़हूर ज़माने को पाने की शर्त यह कि हम पूर्णरूप से उन के आज्ञाकारी बन कर रहें।

हजरत इमाम-ए-जाफ़रे सादिक अलेहिस्सलाम ने अबू बसीर से इस हकीकत को इस तरह बयान किया है:

يا ابا بصير: طوبى لمحبى قاتلنا المستظرفين لظهوره فى غيبته والمطيعين له فى ظهوره اوليائهم اولياء الله لا خوف عليهم ولا هم يحزنون

ऐ अबू बसीर ! हमारे क़ायम को चाहने वाले खुश नसीब हैं कि जो ग़ैबत के ज़माने में उनके ज़हूर की प्रतीक्षा में होंगे और ज़हूर के ज़माने में इनके आज्ञाकारी होंगे। उनके अवलिया खुदा के अवलिया हैं। उन्हें ना तो कोई दुख होगा और ना ही कोई तकलीफ़।(२)

इस रेवायत को आधार पर खुदा और इमाम-ए-जमाना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के अवलिया (दोस्त) वह लोग हैं कि जो इमाम-ए-जमाना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के

ज़हर की प्रतीक्षा में हैं और वह लोग इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ की फ़ौज में होंगे और उनके दुश्मनों से दूर रहेंगे और उनसे नफ़रत करेंगे।

हकीकत में ऐसे लोग कि जो इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के ज़हर की प्रतीक्षा में नहीं थे बल्कि वह खुद किसी पोस्ट तक पहुंचना चाहते थे, जब उन्होंने देखा कि उनका लक्ष्य पूरी नहीं होगा तो वह लोग इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ को छोड़ कर उनके दुश्मनों के साथ हो जाएँगे।

इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ का संदेश सबके लिए

इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के महत्वपूर्ण उद्देश में से यह है कि वह सारे इंसानों को इस्लाम की दावत देंगे। उस समय दुनिया में हर धर्म वालों को इस्लाम की तरफ़ दावत दी जाएगी, और सबसे कहा जाएगा कि वह बातिल को छोड़ दें और खुदा के दीन यानी ईस्लाम को स्वीकार करें, जब यह संदेश लोगों को दिया जाएगा तो इस समय कुछ ऐसे वाक़ेआत सामने आएँगे कि जिससे पूरी दुनिया वालों को सुकून मिलेगा। और उस बीच ऐसे वाक़ेआत होंगे कि जो लोगों के दिलों में जगह बना लेगा और लोग सामुहिक रूप से इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लेंगे।

ख़ुदा वन्दे आलम कुर्आन में इरशाद फ़रमाता है:

إذا جاء نصر الله والفتح، ورأيت الناس يدخولون في دين الله أفواجاً

जब खुदा की सहायता आजाएगी तो आप देखेंगे कि लोग खुदा के धर्म में गिरोह गिरोह दाखिल होंगे।(३)

इस आधार पर उस ज़माने में लोग गिरोह गिरोह इस्लाम को स्वीकार करेंगे।

दुनिया वालों का इस्लाम के प्रति प्रेम इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के संदेश के बाद होगा। ये सब कुछ, कुछ वाक़ेआत के होने के बाद होगा कि जिसे वह लोग ज़हूर के आरम्भ में ही देखेंगे। जिससे कि लोगों में हकीकत ज़ाहिर हो जाएगी और लोग गिरोह गिरोह खुदा के दीन को स्वीकार करेंगे।

हज़रत इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलेहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

إذا قام القائم عليه السلام دعا الناس إلى الإسلام جديداً وهداهم إلى أمر قد وثرو ضل عنه الجمهور انما سمي القائم مهدياً، لأنه يهدي إلى أمر مضلول عنه وسمي القائم لقيامه بالحق

जब भी हमारा क़ायम ज़हूर करेगा, लोगों को दोबारा इस्लाम की दावत देगा, और उनको उन चीज़ों की तरफ़ हेदायत करेगा कि जो पुराना है और जिसे छोड़ कर अक्सर लोग गुमराह हो चुके हैं, इसीलिए क़ायम का नाम मेहदी होगा क्योंकि वह पुराने दीने इस्लाम की तरफ़ दावत देंगे और क़ायम नाम इसलिए है क्योंकि वह हक़ के लिए क़याम करेगा।(४)

इस रेवायत से यह पता चलता है कि इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ ज़हूर के बाद लोगों को दोबारा इस्लाम की तरफ़ दावत देंगे और उन्हें गुमराही से बचाएँगे और उनकी हेदायत करेंगे उस चीज़ की तरफ़ जिससे लोग गुमराह हो चुके होंगे। इस रेवायत में क़त्ल को बयान नहीं

किया गया है। इंसानों को इस्लाम की तरफ़ दावत के लिए दलील की आवश्यकता है। रेवायत के अनुसार यह वही प्रोग्राम है जिसे इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ अंजाम देंगे।

दलील का नतीजा यह होगा कि लोग इस्लाम पर विश्वास करते हुए उसको स्वीकार करेंगे और हेदायत के रास्ते पर चलने लगेंगे। उस समय कुर्आन लोगों के दिलों में समा जाएगा और इस्लाम को एक नया जीवन मिलेगा।

हज़रत ईमाम-ए-हसन अलैहिस्सलाम की ज़ियारत में आया है की:

السلام عليك يا ابا الامام المنتظر، الظاهرة للعالمين حجة، والناطقة في اليقين معرفة، والمحتجب عن العين
الظالمين، والمغيب عن دولة الفاسقين، والمعيد ربنا به الاسلام جديد الانطماس والقرآن غصاً بعد
الاندراس

ऐ इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के पिता आप पर सलाम हो कि बुद्धिमानों के लिए उनकी दलील साफ़ साफ़ है और उनकी मारेफ़त, विश्वास के खज़ाने में भरी है। ज़ालिमों की आँखों पर उनकी ग़ैबत का पर्दा पड़ा हुआ है और वह फ़ासिकों की आँखों से छुपे हुए हैं। खुदा इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के माध्यम से इस्लाम और कुर्आन को नया जीवन देगा।(५)

शब्दकोष में " इन्तेमास " का अर्थ नाबूद होने के अर्थ में है। इस रेवायत में हज़रत इमाम-ए-हसन असकरी अलैहिस्सलाम ने दोनों अर्थ मुराद लिया है। ग़ैबत के ज़माने में इस्लाम में जो परिवर्तन हुआ होगा उसे इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ फिर से सही इस्लाम लोगों के सामने पेश करेंगे और इस्लाम अपनी असली

हालत पर पलट जाएगा। अगरचे बहुत से ऐसे मुल्क हैं कि जो इस्लामी राज्य के नाम से तो प्रसिद्ध हैं लेकिन उनके यहाँ धर्म का पालन नाम का भी नहीं है। अगरचे वह लोग मुस्लमान हैं मगर सिर्फ नाम के।

कार्य विशेष (अमरे अजीम)

इमाम-ए-जमाना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ दुनिया वालों के सामने जो कुछ भी उजागर करेंगे रेवायात में उसे कभी कार्य विशेष (अमरे अजीम) और कभी अमरे जदीद (नया कार्य) कहा गया है।

अबू सईद खोरासानी कहते हैं कि मैंने हजरत इमाम-ए-जाफ़रे सादिक अलैहिस्सलाम से पूछा कि:

المهدي والقائم واحد؟

فقال: نعم۔

قلت: لاي شئ سمي المهدي؟

قال: لانه يهدي الى كل امر خفي، وسي القائم لانه يقوم بعدما يموت، انه يقوم بامر عظيم

क्या मेहदी (अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ) और कायम एक ही शख्स हैं ?

इमाम-ए-जाफ़रे सादिक अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: जी हाँ।

मैंने पूछा उन्हें मेहदी क्यों कहा जाता है ?

इमाम ने फ़ारमाया: क्योंकि वह हर छिपे हुए अमर (कार्य) की तरफ़ लोगों की हेदायत करेंगे।

और उन्हें क़ायम के नाम से इसलिए याद किया जाता है, क्योंकि अपने नाम के मिट जाने के बाद वह प्रकट होंगे। और वह अमरे अज़ीम के साथ प्रकट होंगे।(६)

आप ने देखा कि इस रेवायत में भी बयान किया गया है कि इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ एक अज़ीम अमर (कार्य विशेष) के लिए ज़हूर करेंगे।

इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ जिस अमरे अज़ीम (कार्य विशेष) के लिए प्रकट होंगे वह इस क्रम में महान है कि जिसके कारण इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ को ही क़ायम कहा जाता है।

इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ जिस अमरे अज़ीम के लिए प्रकट होंगे क्या यह वही कार्य होगा कि जो रसूले ख़ुदा, हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम और दूसरे इमामों के माध्यम से लोगों के लिए बयान किया गया था और फिर ख़िलाफ़त (यानी रसूल ख़ुदा, हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम के बाद हज़रत अली अलैहिस्सलाम को रसूले ख़ुदा का जानशीन होना चाहिए था मगर उनकी जगह ज़बरदस्ती दूसरे लोग रसूले ख़ुदा के जानशीन बन कर बैठ गए।)के छीन लिए जाने, बिदतों (बिदआत यानी हव चीज़ें जो इस्लाम धर्म में नहीं हैं उसको इस्लाम में दाखिल कर देना) के आने, और समय के साथ-साथ इस्लाम को भूल जाना, या इनके अलावा कोई और चीज़ है जिसको अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम ने बयान नहीं फ़रमाया और अब उसे इमाम-ए-ज़माना

अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ सब लोगों के लिए उजागर करेंगे ?

इस प्रश्न के उत्तर में पहले इमाम-ए-जाफ़रे सादिक अलैहिस्सलाम से बयान हुई रेवायत पर ध्यान दे:

इमाम-ए-जाफ़रे सादिक अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

إذا قام القائم عليه السلام جاء بأمر جديد كما دعى رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم في بدو الإسلام إلى أمر جديد

जब कायम (यानी इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ) प्रकट होंगे तो वह दुनिया वालों के सामने वही अमरे अज़ीम लाएँगे कि जो रसूल खुदा, हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम ने इस्लाम का सदेश पहली बार सुनाया था और लोगों को इस्लाम की तरफ़ दावत दी थी। (७)

इस रेवायत में इमाम-ए-जाफ़रे सादिक अलैहिस्सलाम ने इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के बारे में फ़रमाया कि वह ऐसी चीज़ लाएँगे कि जो रसूल खुदा, हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम इस्लाम के साथ लाए थे। अगरचे इस रेवायत में साफ़ साफ़ यह बयान नहीं हुआ है कि इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ कोई नया अमरे अज़ीम लेकर आएँगे लेकिन इस रेवायत से यही बात समझ में आती है।

संभव है कि कुछ लोग इमाम-ए-जाफ़रे सादिक अलैहिस्सलाम से बयान होने वाली रेवायत पर ध्यान ना दें और यह कहें कि:

चूँकि इस्लाम के बहुत से अहकामात लोगों तक नहीं पहुँचे पस उन्हें बयान करना उनके लिए एक नया कार्य

होगा अतः उसे एक अमरे जदीद के नाम से याद किया गया है।

इसके उत्तर में हम कहेंगे कि: अगर हम इस रेवायत के अर्थ को, कि जो उसमें बयान किया गया है उसको ना समझें और उस अर्थ को छोड़ कर कोई और अर्थ समझें तो एक और बात भी उससे समझ में आती है और वह यह है कि क्या रसूले खुदा ने नहीं फ़रमाया था:

اَنَا مَعَاشِرُ الْأَنْبِيَاءِ نَكَّمُ النَّاسَ عَلَى قَدَرِ عَقُولِهِمْ

हम पैगमर (दूत), लोगों से उनकी अक़ल (बुद्धी) के अनुसार ही बात करते हैं।(८)

चूँकि ज़हूर के ज़माने में लोगों की अक़ल मोकम्मल हो जाएगी इसलिए इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ लोगों के लिए अमरे जदीद बयान करेंगे, कि जिसको इंसानी समाज पहले नहीं जानता होगा। मगर यह याद रहे कि हर अमरे जदीद और इस्लाम का नया हुक्म इस्लाम के जीवन दाता उसूल में से होगा ना यह कि इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ कोई नया दीन लेकर आएँगे।

अमरे अज़ीम (कार्य विशेष) क्या है ?

अब यह सवाल पैदा होता है कि इस रेवायत में बयान होने वाले अमरे अज़ीम वही अमरे जदीद हैं और क्या दोनो का अर्थ एक ही है ?

अगर दोनों का अर्थ एक ही है तो फिर वह अमरे अज़ीम और अमरे जदीद क्या है कि जिसके लिए इमाम-

ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ ज़हूर के बाद उसको लोगों तक पहुँचाने का प्रयास करेंगे ?

ज़हूर के रहस्य को समझने वाले ही इसका उत्तर जानते हैं। अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की रेवायात में कभी इशारे से तो कभी साफ़-साफ़ इस बात को बयान किया गया है। जिसके अर्थ को कुछ खास लोग ही जानते हैं कि जो अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की बातों में छुपे हुए रहस्य को समझते हैं।

हज़रत इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम एक रेवायत में इरशाद फ़रमाते हैं :

حديث تدرية خير من الف تروية، ولا يكون الرجل منكم فقيهاً حتى يعرف معاريض كلامنا، وإن الكلمة من كلامنا لتصرف على سبعين وجهاً لنا من جميعها المخرج

एक रेवायत के अर्थ को समझना हज़ार रेवायात को बयान करने से बेहतर है। तुम में कोई व्यक्ति भी फ़कीह नहीं हो सकता कि जब तक वह हमारे अक़वाल में इशारा ना समझ ले। यक़ीनन हमारी बातों के एक-एक शब्द से ७०, ७० अर्थ निकलते हैं।(९)

अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की नज़र में वह लोग फ़कीह हैं कि जो अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम के बातों को समझने की क्षमता रखते हैं अतः फ़कीह वही है कि जो अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की बातों में छिपे हुए इशारे को समझ ले।

अमरे अज़ीम को बयान करने से पहले इस बात पर ध्यान दे :

ख़ुश नसीब हैं वह लोग जो इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ की आवाज़ सुन कर लब्बैक

(हम हाज़िर हैं) कहेंगे और उस इमाम के हुक्म का पालन करेंगे।

ख़ुश नसीब हैं वह लोग जिनको ज़हूर का बा बरकत ज़माना नसीब होगा।

जो दीन में हर तरह की ख़ुराफ़ात से दूर हो जाएँगे और इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुशरीफ की शरण में रहेंगे और उनके न्यायिक राज्य के गवाह होंगे।

उस ज़माने के लोग इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुशरीफ के राज्य में नया जीवन पाएँगे और प्रगति के रास्ते पर चलेंगे और फिर वह लोग अमरे अज़ीम के रहस्य को जान लेंगे।

इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुशरीफ के जीवन दाता छाया से उस ज़माने के लोगों की अक़लें मोकम्मल हो जाएँगी। वह लोगों के दिलों को नया जीवन प्रदान करेंगे जिस के माध्यम से वह आलमे मलकूत (वह दुनिया जहाँ फ़िरशते रहते हैं।) का नज़ारा करेंगे।

अब हम अमरे अज़ीम के बारे में पैदा होने वाले प्रश्न का उत्तर देंगे कि अमरे अज़ीम अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की वेलायत के सिलसिले में एक महत्वपूर्ण नुक़्ता (पोवाइंट्स) है। ज़हूर के ज़माने में अमरे अज़ीम भी आएगा।

लोगों की अक़लें सीमित हैं और वह ग़ैबत के रहस्य को नहीं समझ सकते, जब इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुशरीफ का ज़हूर होगा उस समय इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुशरीफ के माध्यम से लोगों की अक़लें

मोकम्मल हो जाएँगी और वो लोग आध्यात्मिक बातों को आसानी से समझ लेंगे । इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ मआरिफ़ के महान नुकात को बयान करेंगे और इस बात की गवाही कुर्आन भी देगा।

इसी बात की रेवायत जनाब मोहम्मद इब्ने अम्र इब्ने हसन ने की है:

ان أمر آل محمد عليهم السلام امر جسيم متعق لا يستطيع ذكر ولو قد قام قائمنا لنكلم به وصدق القرآن

अमरे अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम, एक ऐसा अम्र है कि जो पर्दे में छिपा हुआ है और जिस को उजागर करना सम्भव नहीं है और जब हमारा कायम (यानी इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ) ज़हूर करेंगे वह उसे बयान करेंगे और कुर्आन उसकी गवाही देगा।(१०)

इस बात से साफ़ होता है कि वেলাयत के महान कार्य को ग़ैबत के ज़माने में आम लोग नहीं समझ सकते हैं और उनके लिए बयान करना सम्भव नहीं है। मगर जब अक़ले मोकम्मल हो जाएँगी तो उस समय ईश्वर, इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ को ज़ाहिर करेगा और इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के आने से पूरा सही इस्लाम लोगों के सामने आ जाएगा और किसी को भी कोई शक नहीं रह जाएगा ।

जनाब मोहम्मद इब्ने अम्र इब्ने हसन ने यूँ बयान फ़रमाया है:

إِذَا أذنَ اللهُ لِنَا فِي الْقَوْلِ ظَهَرَ الْحَقُّ، وَاضْمَحَلَّ الْبَاطِلُ، وَانْخَسَرَ عَنْكُمْ

जब खुदा मुझे बोलने की आज्ञा देगा तो सत्य (हक़) ज़ाहिर हो जाएगा, बातिल नीस्तो नाबूद हो जाएगा और

तुम लोगों के लिए हक़ व बातिल बिल्कुल साफ़ हो जाएगा।(११)

खुदा का संदेश

अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम ने रेवायात में, जहाँ ग़ैबत के ज़माने कि कठिनायों को बयान किया है, वहीं ज़हूर के बाबरकत ज़माने को भी बयान किया है। और उस ज़माने के लोगों को सौभाग्य वाले कहा है।

हज़रत इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम, ने इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुशरीफ़ के बारे में इरशाद फ़रमाया है:

هو المفرج للكر ب عن شيعته بعد ضنك شديد وبلاء طويل وجور، فطوبى لمن أدرك ذلك الزمان

वह अपने शीयों से हर तरह की कठिनायों को दूर करेंगे और यह सब एक लम्बे समय के बाद होगा और उस ज़माने के लोग सौभाग्य वाले होंगे।(१२)

जी हाँ ! सौभाग्य वाले हैं वह लोग जो उस ज़माने को देखेंगे। उस दिन दुनिया को बनाने का लक्ष्य पूरा हो जाएगा। वह बुद्धि पूर्णता का ज़माना होगा और हर तरफ़ नूर ही नूर होगा। उस ज़माने में लोग सच्चे और पवित्र दिल से खुदा की इबादत करेंगे। नफ़्स (मनोवेग) पर क़ाबू होगा और शैतान की प्राजय होगी।

खुदा वन्दे आलम कुर्आन में फ़रमाता है:

وما خلقت الجن والانس الا ليعبدون

मैंने जिन्नातों और इंसानों को सिर्फ़ और सिर्फ़ अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।(१३)

इस आधार पर सदियाँ बीत जाने के बाद इल्म व मारफ़त से भरा हुआ दिन आएगा जब इंसान के पैदा करने का लक्ष्य पूरा हो जाएगा। उस ज़माने में सब के सब उन्नति और प्रगति के रास्ते पर चल रहें होंगे और इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ की शरण में सब को एक नया जीवन मिलेगा और इंसान शैतान के चंगुल से मुक्ति पा जाएगा।

ज़हर के ज़माने के लोग: रसूले खुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम की ज़बान से।

उस ज़माने लोग एक खुदा कि इबादत करेंगे और अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम के मक़ाम को पहचानेंगे। इसलिए वह सब नेक और शरीफ़ होंगे। रसूले खुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम ने ज़हर के ज़माने के लोगों को चौदहवीं के चाँद और मुश्क व अम्बर के जैसा कहा है।

एक लम्बी रेवायत में हज़रत इमाम-ए-जवाद अलैहिस्सलाम ने दसवें इमाम और वह रसूले खुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम से इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के ज़हर की घटना को बयान करते हैं, इस रेवायत में रसूले खुदा ने ओबै इब्ने कॉब से यूँ फ़रमाया:

.....يُخْرِجُ وَجَرَئِيلَ عَنْ يَمْنَةِ وَمِيكَائِيلَ عَنْ لَيْسَةِ، وَسُوفَ تَذْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ وَلَوْ بَعْدَ حِينٍ
وَأَوْضُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ۔

يا ابي: طوبى لمن لقيه، وطوبى لمن احببه، وطوبى لمن قال به، يتنجيهم من الهلكة، وبالاقرار بالله وبرسوله
وجمع الامم، يفتح الله لهم الجب، مثلهم في الارض كمثل المسك الذي يسطع ريحه فله تنعيم ابدى، ومثلهم في السماء
كمثل القمر المنير الذي لا يطفأ نوره ابداً

मेहदी (अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ) इस हाल में प्रकट होंगे कि उनके दायीं तरफ़ जिबरईल और बायीं ओर मीकाईल होंगे। और मैं तुम्हारे लिए एक चीज़ बयान कर रहा हूँ तुम उस को अवश्य ही याद करोगे, अगरचे यह एक लम्बे समय के बाद ही होगा। और मैं अपने सारे मोआमेलात खुदा के हवाले करता हूँ।

ऐ ओबै ! सौभाग्य वाले हैं वह जो उनसे (यानी इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ) से मुलाकात करेंगे।

सौभाग्य वाले हैं वह जो उनसे मोहब्बत करें।

सौभाग्य वाले हैं वह जो यह विश्वास रखते हों कि इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ उसे हलाकत से बचाएँगे।

खुदा को स्वीकार करने और इमामों की वेलायत को स्वीकार करने के कारण खुदा इसके लिए स्वर्ग के दरवाज़े खोल देगा। धरती पर उस की मिसाल मुश्क (एक खुशबू दार चीज़) जैसी है कि जिस की खुशबू तो फैलती है मगर वह कभी बदलती नहीं है। आकाश में उसके प्रकाश की मिसाल चाँद की तरह है कि जिसका नूर कभी खत्म नहीं होगा।(१४)

ज़हर के ज़माने के लोगों का चेहरा चौदहवी के चाँद की तरह चमकेगा जिससे मालूम होगा कि उनको आकाश से नूर दिया गया है। उनके सीनों में ईश्वर के मआरिफ़ का प्रकाश होगी जिसके कारण उनका चेहरा भी चमक जाएगा।

इमाम-ए-जवाद अलैहिस्सलाम ने इमाम-ए-जाफ़रे सादिक अलैहिस्सलाम से बयान किया है, आपने जनाबे इल्यास नबी से फ़रमाया: (जनाबे इल्यास उस चार नबियों में से एक हैं जो आज तक ज़िन्दा हैं और इमाम के ज़हूर के समय इमाम के साथ होंगे।)

فودت أنّ عيسى كنون مع مهدى هذه الامة، والملائكة يسوف آل داؤد بين السماء والأرض، تعذب
أرواح الكفرة من الأموات، وتخلق بهم أرواح أشباههم من الأحياء، ثم أخرج سيّفاً، ثم قال: ها! إنّ هذا
منها

मुझे पसंद है कि तुम्हारी आँखें उस उम्मत के मेहदी को देखें कि जब फ़रिश्ते दाऊद (एक नबी का नाम है) की तलवार से धरती और आसमान के बीच से जाने वाले काफ़िरों को सज़ा देते हैं और ज़िन्दा काफ़िरों को भी उनके पास (नर्क) में भेज देते हैं। (१५)

फिर इमाम-ए-जाफ़रे सादिक अलैहिस्सलाम ने अपनी तलवार निकाला और फ़रमाया:

हाँ यह भी उन तलवारों में एक है। यह दृश्य कितना सुंदर होगा कि जब फ़रिश्ते अपनी तलवारों से काफ़िरों को नर्क में भेजेंगे।

धरती और आकाश पर राज्य

इस बहेस में इमाम का इल्म एक महत्वपूर्ण बहेस है। बहुत सी रेवायात में इमामों के इल्म का मसअला एतेक्रादी है।

हम इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ की जियारत में पढ़ते हैं :

قد آتاكم الله يا آل ياسين خلافة، وعلم مجارى امره فيها قضاء ودره ورتبه وأراده في ملكوته

ऐ आले यासीन (यासीन के अंश) ! ईश्वर ने आपको अपना प्रतिनिधी बनाया है और वह हर काम अपने संकल्प से करता है और उसने अपने इरादे (संकल्प) से आपको इल्म (ज्ञान) दिया है।(१६)

इस बात के बाद इस चीज़ पर भी ध्यान दें कि ज़हूर के ज़माने और इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के राज्य में इल्म व हिकमत के दरवाज़े खुल जाएँगे और उस प्रकाशमय समय में इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ अपने इल्म के बूते पर पूरे संसार में न्यायिक राज्य कायम करेंगे और इस तरह उनका राज्य धरती और आकाश और हर जगह होगा।

ज़हूर के ज़माने के बारे में बयान होने वाली रेवायात में बहुत सी ऐसी रेवायात हैं जिनसे यह पता चलता है कि इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ का राज्य सिर्फ धरती पर ही नहीं बल्कि आकाश और हर जगह होगा और इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ हर जगह को गुनाहों से पवित्र कर देंगे। इस बात से यह भी साफ़ हो जाता है कि इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ का ज़हूर सिर्फ और सिर्फ धरती वालों या इसी दुनिया वालों के लिए नहीं बल्कि आकाश और हर जगह वालों के लिए है चाहे कोई ग्रह पर ही जीवन क्यों ना बिता रहा हो। आलमे मलकूत (वह दुनिया जहाँ फ़रिश्ते रहते हैं) की विशेषता

जैसा कि हमने बयान किया कि ज़हूर के ज़माने में सबके दिल पवित्र हो जाएँगे। उस समय हर मर्द और

औरत सब नेक और सालेह (विनम्र) होंगे। क्योंकि जब नेक लोगों का राज्य होगा तो वह दूसरों को भी नेक बना देंगे। इस बारे में ईश्वर कुर्आन में फ़रमाता है:

إِنَّ الْأَرْضَ يَرثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ

मैं अपने बंदों को ज़मीन का वारिस बनाऊँगा।(१७)

इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुशरीफ़ के राज्य की एक विशेषता यह है कि आप सारे इंसानों की हेदायत करेंगे। दुनिया के सारे लोग अपने अंदर परिवर्तन होने के कारण गुमराही से दूर हो जाएँगे और नेक और सालेह लोगों के समाज में होने के कारण हर जगह नेकी और हेदायत होगी। उस दिन इंसानों के लिए मलकूत (वह दुनिया जहाँ फ़रिश्ते रहते हैं) की दुनिया के दरवाज़े खुल जाएँगे और इंसान उस दुनिया को अपनी आँखों से देख सकेगा और यह नेक और सालेह (पुण्य) कार्यों का निष्कर्ष होगा। नेक लोगों के अंदर परिवर्तन होगा।

हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम के सहीफ़-ए-नेजात में आया है कि:

وَبِالْعَمَلِ الصَّالِحِ يَنْتَالُ مَلَكُوتُ السَّمَاءِ

नेक कार्यों के कारण इंसान मलकूत की दुनिया तक पहुँच सकता है।(१८)

अब तक दुनिया जहाँ तक पहुँच सकी है वह संसार का बहुत छोटा सा भाग है। दुनिया अब तक सिर्फ़ उसके भौतिकी पक्ष तक पहुँच सकी है ना कि उसके मलकूती पक्ष तक ।

ज़हर के ज़माने में नेक आमाल करने से बुरे आमाल अपने आप ही ख़त्म हो जाएँगे। जिसके कारण इंसान

मलकूत की दुनिया तक पहुँच जाएगा। अतः उस बा बरकत ज़माने में समाज मलकूत कि दुनिया तक पहुँच जाएगा, जो कि बहुत ही विशेषता का मालिक है। हम आशा करते हैं कि खुदा जल्द से जल्द वह दिन हस तक पहुँचा दे जब इंसानी समाज प्रगति की चरम सीमा पर हो।

इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के ज़माने में संसार के सारे रहस्य इंसान के सामने आ जाएँगे और इंसान उन चीज़ों को देखेगा जो उसने पहले कभी नहीं देखा था क्योंकि उस समय सब नेक और सब का दिल पवित्र होगा इसलिए वह संसार के रहस्य देख पाएँगे।

हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम फ़रमाते हैं:

عَضُوا أَبْصَارَكُمْ تَرَوْنَ الْعَجَائِبَ

अपनी आँखों को (हराम और दुनिया की मोहब्बत से बंद कर लो) तो तुम संसार के रहस्य को देख सकोगे।(१९)

क्योंकि दुनिया की ज़्यादातर चीज़ें छिपी हुई हैं और जिनको यह इंसान इस समय नहीं देख सकता मगर जब इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ का ज़हूर होगा तो सब चीज़ें खुल कर सामने आ जाएँगी। अपनी आँखों को हराम और हर उस चीज़ से बचाओ जो दुनिया से दिल लगी का करण होती है। अगर कोई इंसान दुनिया से दिल ना लगाए तो उसका दिल गुनाहों से पवित्र हो जाएगा और फिर वह संसार के रहस्य को अपनी आँखों से देख सकेगा।

इस बारे में रसूले खुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम फ़रमाते हैं:

لولا ان شياطين يؤمنون على قلوب بني آدم لنظروا الى الملكوت

अगर इंसान के दिल में शैतान जगह ना बनाए तो वह आलमे मलकूत को अपनी आँखों से देख सकता है।(२०)

इस आधार पर जिस दिन इबलीस और शैतान मिट जाएँगे और गमुराह करने वाली चीज़ें ख़त्म हो जाएँगी तो फिर इंसान का दिल नूर से भर जाएगा और वह नूरानी दिल के साथ आलमे मलकूत को देख सकेगा।

समक्षता की कल्पना

अब आप इस नोकते की तरफ़ ध्यान दे कि संसार में कोई भी इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ से नूरानी हो सकता है ?

अतः ज़हूर के ज़माने में आप संसार के जिस कोने में भी होंगे वहाँ से इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ को देख सकेंगे।(२१)

इस बात को समझने के लिए अबू बसीर की बेहतरीन रेवायत पर ध्यान दें।

याद रहे कि दो चीज़ें ऐसी हैं कि जो आलमे मलकूत तक और इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ तक पहुँचने में रुकावट होसकती हैं। उनमें से एक शैतान है और दुसरा इंसान का नफ़से अम्मारा ।

लेकिन ज़हूर के बा बरकत ज़माने में यह सब नीस्त व नाबूद हो जाएँगे। और इंसान का नफ़स बदल जाएगा। और

फिर आलमे मलकूत तक पहुँचने में कोई भी रुकावट नहीं रहेगी।

लेकिन इस ज़माने में शैतान इंसान को बहकाता है और उसको धोका देता है और आलमे मलकूत तक पहुँचने में रुकावट है। शैतान इंसान को इसी दुनिया में लगा देता है और इंसान भी उसके धोके में आ जाता है इसीलिए इंसान ग़ैबत के ज़माने में आलमे मलकूत को नहीं देख पाता और जब देख नहीं पाता है तो फिर उसका इनकार भी कर देता है।

इसीलिए हमारा कर्तव्य है कि हम ग़ैबत के और ज़हूर के ज़माने को पहचानें ताकि नेजात के रास्ते को पहचान सकें।

आत्म-सम्मान

ज़हूर के ज़माने और ग़ैबत के ज़माने में बड़ा फ़र्क है जिससे यह पता चलता है कि ज़हूर का ज़माना ग़ैबत के ज़माने से बेहतर और बा बरकत है। मगर अफ़सोस कि हमारा समाज उसकी विशेषता से बेख़बर है। हर ग़ैरतमंद शीया का यह कर्तव्य है कि वह इन चीज़ों को पहचाने।

हमारा समाज इन सब बातों को क्यों नहीं जानता और उससे क्यों बेख़बर है ?

ऐ शीया जवानों ! ऐ अहलेबैत के पाक व पवित्र पैरोकारों ! सदियों से हज़रत अली अलैहिस्सलाम की खेलाफ़त के छिन जाने पर आँसू बहाने वालों, क्या तुम भी उस ज़माने के मुसलमानों की तरह चुप रोहगे ? क्या अब

भी अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम का हक़ ग़सब (छीना हुआ) रहेगा ?

क्या इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुशरीफ़ से हमारी जुदाई और ग़ैबत की १२ सदियाँ काफ़ी नहीं हैं ?

क्यों अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की मज़लूमियत सदियों से जारी है ?

लेकिन शीया ऐसी बातों से लापरवाह क्यों हैं ?

आख़िर ऐसा क्यों है ?

हम इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए कहेंगे कि खुदा की लानत हो उन लोगों पर जिन्होंने सदियों से लोगों को इस्लाम से दूर कर दिया है कि जिसके कारण लोग वेलायत से दूर हो गए और उसे भुला दिया है। नीस्त व नाबूद हो जाएँ वो लोग जो अमेरिका और बरतानिया के हाथों में कठपुतली बनें हुए हैं और लोगों को गुमराह कर रहे हैं। लेकिन इसमें उम्मत की भी कोताही और ग़ल्ती है।

अब ऐसे लोगों के हलाक़ होने की आशा करते हुए अपने असल मतलब (वास्तविक अर्थ) पर आते हैं। और इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुशरीफ़ के न्यायिक राज्य की एक और विशेषता बयान करते हैं।

ज़हूर का ज़माना, निश्चित ज़माना होगा

ज़हूर के ज़माने की विशेषता बहुत ज़्यादा हैं। हमने इस किताब में उसकी कुछ मिसालें बयान की हैं। उनमें से एक हमारी बहेस से भी सम्बन्धित है और वह यह है कि ज़हूर का ज़माना बहुत ही निश्चित ज़माना होगा। सबके दिल से शक व शंका ख़त्म हो जाएगा। दिल पवित्र होजाएँगे

क्योंकि उस दिन शैतान मिट जाएगा। इंसान की अक़ल पूर्ण हो जाएगी और नफ़्स में परिवर्तन होगा। फिर इंसान खुदा की इबादत करेगा कि जिससे उसको सुकून मिलेगा। क्योंकि खुदा और खुदा की इबादत दिलों को सुकून देती है। खुदा वन्दे आलम कुर्आन में फ़रमाता है:

أَلَا يَذْكُرُ اللَّهُ تَطْمِئِنُّ الْقُلُوبُ

आगाह हो जाओ कि इत्मीनान (निश्चिंता), खुदा को याद करने से ही मिलती है।(२२)

खुदा की याद इंसान के विश्वास में बढ़ोत्तरी का कारण है, यानी इंसान के दिल को सुकून मिलता है कि जिसके कारण शक व शंका दिल से ख़त्म हो जाती है। और इस तरह इंसान का अपने दिल पर काबू हो जाता है और शैतान के धोके से भी सुरक्षित रहता है क्योंकि शैतान उस समय आकर बहकाता है जब वह इंसान को किसी काम के लिए उभारे और उकसाए। मगर जिसका दिल विश्वास से भरा रहता है उसपर शैतान कि किसी भी बात का असर नहीं होता है।

हज़रत अली अलैहिस्सलाम इस बारे में फ़रमाते हैं :

بِالْحَمْدِ تَحْتَ السُّلْطَانِ الْمَطْلُوعِ عَلَى سُرْعٍ

अपने आप को, अपने राज़ों (रहस्यों) के जानने वाले के समक्ष करार दो। (ईश्वर के समक्ष)(२३)

अगर इंसान को यह मालूम हो कि खुदा और उस के भेजे हुए पैगम्बर (दूत) इंसान की हर चीज़ के बारे में जानते हैं और इंसान हर समय उनके समक्ष है तो फिर वह इस सत्य से लापरवाही ना करे तो वो हर उस चीज़ से आँखें बंद कर लेगा जो भी दुनिया से दिल लगाने और

उसके प्रेम का कारण बने। जब इंसान यह समझ जाए कि वह इमाम-ए-जमाना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के समक्ष में है तो फिर हर उस चीज़ से दूरी करेगा जो उसको गुनाह की तरफ़ ले जाती हैं और जो इमाम-ए-जमाना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ की मरज़ी के खिलाफ़ है।

ज़हूर का ज़माना, समक्षता का ज़माना है

हज़रत अली अलैहिस्सलाम की हदीस पर ध्यान देने से पता चलेगा कि इंसान अपने आपको और अपने राज़ व असरार (बातिन) को इमाम-ए-जमाना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ के समक्ष में समझे और इस तरह वह हराम कामों से बच सकता है और वह भी ग़ैबत के ज़माने में कि जो शैतान का ज़माना है। इस ज़माने में इंसान अपने ऊपर कंट्रोल करे। इस तरह इंसान ग़ैबत के ज़माने में भी इत्मीनान (निश्चिंता) प्राप्त कर सकता है। जैसा कि हम ने कहा था कि जब दिल पाक व पवित्र होंगे तो फिर इंसान आलमे मलकूत को भी देख सकता है। मगर अभी तक समक्षता (हालते होज़ूर) और ज़हूर के ज़माने में इंसान की अध्यात्मिक शक्ति, और समक्षता के ज़माने में (यानी जब इमाम-ए-जमाना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ मौजूद होंगे) क्या होगी यह बात विस्तार से बयान नहीं हुई है और इस बात को बयान करने के लिए हम कुछ रेवायात बयान करेंगे, मगर उससे पहले हम कहेंगे कि:

ज़हूर के बा बरकत ज़माने में इंसान की क्षमताएं अपनी चरम सीमा पर होंगी। ऐसा लगेगा कि सब कुछ बदल गया है। ज़हूर के ज़माने में इंसान ना सिर्फ़ यह कि

अध्यात्मिक रूप से बल्कि जिस्मानी रूप से भी तरक्की (प्रगति) करेगा, जिससे संसार का एक नया इतिहास लिखा जाएगा। क्योंकि हमें कहीं भी ज़हूर के ज़माने जैसी पूर्णता नज़र नहीं आती।

ज़हूर के ज़माने में इंसान इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुशरीफ की इमामत व वेलायत कि क्षत्रछाया में अपनी शक्तियों को उजागर करेगा और वह ज़माना नेमतों भरा हुआ ज़माना होगा। जिस तरह उस ज़माने में धरती अपने अंदर छिपे सारे खज़ानों को उगल देगी उसी तरह इंसान भी अपने अंदर छिपी सारी शक्तियों को उजागर करेगा और वह आसानी से अपनी शक्तियों से लाभ उठाएगा।

अगरचे इंसान जिस्मानी रूप से छोटा है लेकिन उसमें असरार व रोमूज़ (राज़ों और रहस्यों) और शक्तियों का एक संसार समाया हुआ है। जो ज़हूर के ज़माने में उजागर होगा। इस तरह संसार का एक नया चेहरा दुनिया वालों के सामने होगा।

ज़हूर के बा बरकत और प्रकाशमय ज़माने में संसार में अनेक परिवर्तन होंगे कि उनमें से कुछ को हम अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम के अक़वाल से भी समझ सकते हैं।

यह किताबें देखें।

- (१) अलगैबा: शैख तूसी हरमतुल्लाह अलैह: २७५
- (२) अहकाकुल हक: १३/३४९. युनाबीऊल मोवद्दा: ४२२
- (३) सूरए नस्र, आयत न०. १ व २
- (४) बेहारुल अनवार: ५१/३०. अलइरशाद: ३४४. आलामुल वरा: ४६१. नवादेरुल अखबार: २७२
- (५) मिस्बाहुज्जाएर: ४१०. बेहारुल अनवार: १०२/६७. सहीफ़ए मेहदीया: ६१४
- (६) बेहारुल अनवार: ५१/३०
- (७) बेहारुल अनवार: ५२/३३८
- (८) बेहारुल अनवार: २/२४२
- (९) बेहारुल अनवार: २/१८४
- (१०) बसाएरुद्धरजात: २८. बेहारुल अनवार: २/१९६
- (११) अलगैबा: शैख तूसी रहमतुल्लाह अलैह: १७६
- (१२) कमालुद्दीन: ६४७

- (१३) सूरए ज़ारेयात, आयत न०. ५६
- (१४) बेहारुल अनवार: ५२/३११
- (१५) बेहारुल अनवार: ४६/३६४
- (१६) सहीफ़ए मेहदीया: ५७१
- (१७) सूरए अम्बीया, आयत न०. १०५
- (१८) बेहारुल अनवार: ९५/४६५
- (१९) मिसबाहुशरीया: ९
- (२०) बेहारुल अनवार: ७०/५९
- (२१) सहीफ़ए मेहदीया: ९३
- (२२) सूरए राद, आयत न०. २८
- (२३) मिसबाहुशरीया: ९

This document was created with Win2PDF available at <http://www.daneprairie.com>.
The unregistered version of Win2PDF is for evaluation or non-commercial use only.